ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

पेशेवर अपराधिओं का जीवन–दर्शन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Life Philosophy of Professional Criminals: A Sociological Study

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 25/07/2021

दयाशंकर सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
सकलडीहा पी.जी.कालेज,
सकलडीहा, चन्दौली,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

अपराध को अपना व्यवसाय व जीविका–निर्वाह का एकमात्र साधन बनाने वाले अपराधियों को उनके अपराधी जीवन के आधार पर तीन समूहों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है– साधारण अपराधी, संगठित अपराधी पेशेवर अपराधी। साधारण अपराधियों में कार्यकुशलता बहुत कम पायी जाती है। दूसरी ओर संगठित अपराधियों में संगठन मिलता है। इसी संगठन के कारण ये किसी एक अपराध में विशेषज्ञता भी रखते हैं जिसका विशाल व्यापार की तरह संचालन करते है। ये अपराधी आर्थिक क्रियाओं पर नियन्त्रण प्राप्त करने के संगठित अपराधों के कुछ रूप वेश्यावृत्ति, जुआ, नशीली वस्तुओ के वितरण आदि में मिलते है। तीसरे प्रकार के पेशेवर अपराधी अधिक निपुण होते है। अन्य पेशेवर अपराधियों से सम्पर्क व संगठन कें कारण, ये आसानी से पकडें भी नही जाते ।

Criminals who make crime their vocation and sole means of subsistence can be classified into three groups on the basis of their criminal life - ordinary criminals, organized criminals, professional criminals. The efficiency of ordinary criminals is very less. On the other hand, organization is found in organized criminals. Due to this organization, they also have expertise in any one crime, which they operate like a huge business. These criminals find some form of organized crime in prostitution, gambling, distribution of drugs etc. to gain control over economic activities. The third type of professional criminals are more skilled. Due to the association and association with other professional criminals, they are not easily caught.

मुख्य शब्द : पेशेवर अपराधी, जीवन–दर्शन, साधारण अपराधी।
Professional Criminal, jeevan-Darshan, A Simple Criminal.

प्रस्तावना

साधारण अपराधी से एक पेशेवर अपराधी बनने में एक शैक्षणिक प्रकिया मिलती है जिसमें व्यक्ति शनैः–शनैः अपराधी जीवन को अपनाता है। आरम्भ में साधारण अपराधी कारागृहों, क्लबों, सिनेमा–गृहों व रेस्तरां आदि में पेशेवर अपराधियों के सम्पर्क में आते है तथा यही से उनकी पेशेवर अपराध में भर्ती होती है और उनकी शिक्षा व प्रशिक्षण आरम्भ होता है। रेक्लेस के अनुसार, पेशेवर अपराधी की आरम्भिक शिक्षा अपर्यवेक्षी अपराधी गिरोहों में होती है। आरम्भ में तो अपराधी परम्परागत समाज और अपने आदर्शमूलक समूहों कें नियमों को पूर्ण रूप से स्वीकार करता है परन्तु धीरे–धीरे अपने परिवार, रिश्तेदारी–समूह, स्कूल व समुदाय से उसका अलगाव होता जाता है तथा उसकी उनके प्रति निष्ठा कम होती जाती है और अपराधी–संसार के प्रति निष्ठाा बढती जाती है। वह इस अपराधी–संसार की धारणाओं व अनुभवों आदि को ग्रहण कर अपने को इस समाज का विश्वसनीय एवं वफादार सदस्य सिद्ध करता जाता है। काल्डवेल का भी कहना है कि अपराधी–संसार भावी पेशेवर अपराधी का पोषण करता है।उसे संरक्षण प्रदान करता है उसका मनोरंजन करता है तथा अपने काम में निपुणता प्राप्त करने पर उसे एक नायक के रूप में सम्मानित करता है कभी–कभी तो एक अपराधी को अपराधी संसार द्वारा सदस्य स्वीकार किये जाने के लिए कठोर प्रक्रिया से भी गुजरना पडता है। इस अवधि में वह अन्य पेशेवर अपराधियों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है। सदरलैण्ड का कहना है कि एक पेशेवर अपराधी का अन्य पेशेवर अपराधियों द्वारा पेशेवर अपराधी

स्वीकार किया जाना अति आवश्यक है क्योकि इस स्वीकृति के बिना किसी भी प्रकार का ज्ञान व अनुभव उसे सफल पेशेवर अपराधी नही बना सकता । परम्परागत समाज से अलगाव के उपरान्त आरम्भ में तो वह परम्परागत और अपराधी समाजों के प्रतिमानों दोनों को मानता है परन्तु धीरे–धीरे केवल अपराधी समाज के प्रतिमानों को ही अपनाता है तथा परम्परागत समाज से अपने को बिल्कुल पृथक् करता है इस प्रक्रिया का विवरण देते हुए रूथ कैवन ने कहा है कि सामुदायिक लोक–रीतियों का पालन करने वाली एजेन्सियों के प्रति निष्ठा से अलगाव के उपरान्त वह कुछ समय तक परम्परागत एवं अपराधी दोनों समाजों का सदस्य बना रहता है परन्तु शीघ्र ही परम्परागत समाज से बिल्कुल पृथक् होकर अपने जीवन को अपराधी समाज से संगठित करता है। सदरलैण्ड इस प्रक्रिया को परिपक्वता की प्रक्रिया बताता है। कभी–कभी कुछ पेशेवर अपराधी गन्दी बस्तियों सस्ते होटलों अथवा किरायें कें कमरो आदि में इकट्ठे रहतें है तथा कुछ एक स्थान से दूसरे स्थान में घूमते रहते है। उनका यौन–जीवन नियन्त्रणहीन रहता है तथा वे या तो रखैल रखते है या फिर वेश्याओं से अस्थायी सम्बन्ध बनाये रहते है। उनके आपस में मिलने के स्थान रेस्तरॉ क्लब, सिनेमाघर, जुआखाने अथवा पार्क आदि होते है जहॉ वे योजनाओं पर विचार–विमर्श करते है एक–दूसरे से सहायता मॉगते है तथा एक–दूसरे को महत्वपूर्ण सूचना देते रहते है।

अध्ययन का उद्देश्य

पेशेवर अपराधी ऐसे अपराधों में विशेषज्ञता रखते हैं जिनमें हिंसा कम और निपुणता अधिक आवश्यक होती है। पाकेटमारी, दुकानों से चोरी, जालसाजी, तस्करी आदि पेशेवर अपराध के कुछ उदाहरण हैं। पेशेवर अपराधी और संगठित अपराधी के बीच प्रमुख अन्तर यह मिलता है कि प्रत्येक पेशेवर अपराधी सदा संगठित गिरोह का सदस्य बनकर अपराध नहीं करता तथा कुछ पेशेवर अपराधी अकेले भी अपराध करते है।

साधारण तथा पेशेवर अपराधी में अन्तर

साधारण अपराधी का अपराध करना प्रमुख पेशेवर आजीविका साधन नही होता है जबकि पेशेवर अपराधी का अपराध करना ही निर्वाळ–साधन होता है तथा वह अपना पूरा समय और शक्ति अपराध करने में लगता है,साधारण अपराधी के अपराध में कोई विशेषता नहीं मिलती जबकि पेशेवर अपराधी का अपराध अत्यधिक विशेषीकृत होता है साधारण अपराधी का अपराध योजनाबद्ध नहीं होता परन्तु पेशेवर अपराधी का अपराध सावधानीपूर्वक आयोजित होता है पेशेवर अपराधी का जीवन अत्यधिक विकसित अपराधी जीवन होता है परन्तु साधारण अपराधी का जीवन विकसित अपराधी जीवन नहीं होता है पेशेवर अपराधी को अन्य अपराधियों द्वारा उच्च प्रतिष्ठा मिलती है परन्तु साधारण अपराधी को कोई ऐसा गौरव नहीं मिलता पेशेवर अपराधी अधिकाशंतः अन्य पेशेवर अपराधियों के सम्पर्क में रहता है जबकि साधारण के सम्पर्क साधारणतया अनपराधियों से अधिक होते है।

क्वीने का विचार है कि पेशेवर अपराधी परम्परागत अपराधियों की तुलना में अधिकांशतः अच्छी आर्थिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति होते है। सदरलैण्ड का विचार है कि पेशेवर अपराधियों की वर्तमान आर्थिक स्थिति कितनी भी उॅची क्यों न हो परन्तु वे अधिकांशतः अपना जीवन परिचायक, विक्रेता आदि जैसे निम्न स्थिति वाले व्यवसायों से आरम्भ करते हैं। इसी प्रकार क्वीने का विचार है कि पेशेवर अपराधी अपना अपराधी जीवन सापेक्षतः अतिकाल आयु में आरम्भ साधारण अपराधियों से बहुत देर में अपना अपराधी जीवन आरम्भ करते है। आयु उनकी निपुणता व अन्तर्दृष्टि को परिपक्व बनाती है तथा उनका अपने में विश्वास बढाती है। परंतु हरबर्ट ब्लाच का विचार है कि पेशेवर अपराधी अपना अपराधी जीवन सापेक्षतः आरम्भिक आयु में प्रारम्भ करते है।

सदरलैण्ड ने पेशेवर अपराधियों की तकनीकी कुशलता, उच्च स्थिति, एकमत्य, विभिन्न सम्पर्क और संगठन पर भी बल दिया है।

तकनीकी कुशलता एवं प्रविधियों का संग्रह

जिस प्रकार डॉक्टरों, वकीलों व इंजीनियरों आदि में योग्यताओं का संग्रह और कार्यकुशलता पायी जाती है उसी प्रकार पेशेवर अपराधियों में भी प्रविधियों का संग्रह मिलता है जिन्हें अपराध करने गिरफ्तारी के उपरान्त अपने को बचाने तस्करी व चोरी इत्यादि का माल बचने आदि के लिए प्रयोंग किया जाता है। इन प्रविधियों में शारीरिक बल तथा बुद्धिमानी अधिक मिलती है। इन्ही प्रविधियों कें संग्रह के आधार पर ही पेशेवर अपराधी का साधारण अपराधी से प्रभेद भी किया जाता है। कुछ प्रविधियों के विशिष्ट होने के कारण पेशेवर अपराधियों की कुछ ही अपराधों में विशेषज्ञता मिलती है।

प्रस्थिति

अन्य पेशेवर व्यक्तियों की तरह पेशेवर अपराधी की भी एक प्रस्थिति होती है जो उसकी तकनीकी कुशलता, वित्तिय अवस्था, उच्च स्तर के व्यक्तियों से सम्पर्क शारीरिक शक्ति, वेशभूषा, शिष्टाचार आदि पर आधारित होती है। उसकी स्थिति उसके प्रति अन्य अपराधियों की धारणाओं तथा पुलिस, समाचार–पत्रों व न्यायालय के अधिकारियों आदि के व्यवहार से ज्ञात होती है। इसी स्थिति के कारण ही पेशेवर अपराधियों में पदक्रम भी पाये जाते है तथा उचे ंक्रम का पेशेवर अपराधी निम्न क्रम के अपराधी से पृथक रहने का भी प्रयास करता है।

एकमत्य

पेशेवर अपराधी में सहभागी भावनाऍ व मनोभाव एवं समान अनुभव मिलते है। उदाहरण के लिए सभी जेबकतरों में भावी शिकार के लिए तथा उन विशेष परिस्थितियों कं प्रति जिनमें शिकार पाया जाता है समान प्रतिक्रियाऍ पायी जाती है। प्रतिक्रियाओं की यह समरूपता अनुभवों की समान पृष्ठभूमि के कारण ही मिलती है। ये प्रतिक्रियाऍ उसी प्रकार की होती है जिस प्रकार विभिन्न डॉक्टरो में एक रोगी के लिए रोग की जॉच सम्बन्धी अन्तर्बोध पाये जाते है। तथा विभिन्न वकीलों में एक विशेष परिस्थिति में एक न्यायधीश के लिए प्रतिरूप उत्पन्न होता है एक पेशेवर अपराधी दूसरें पेशेवर अपराधी के विरूद्ध

पुलिए को सूचना देकर उसे गम्भीर हानि नही पहुॅचाता है। अतः पारस्परिक निष्ठा के कारण तथा अपराधी संसार में प्रतिष्ठा खोने के भय से एक पेशेवर अपराधी पुलिस द्वारा कठोर दण्ड तो सह लेता है परन्तु दूसरे अपराधी के किसी भेद को नहीं खोलता। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि पेशेवर अपराधियों में पुलिस के प्रति प्रतिक्रिया उनके समान अनुभवों का ही परिणाम है इन्ही समान प्रतिक्रियाओं धारणाओं व मूल्यों के कारण ही कुछ पेशेवर अपराधी मिलकर भी अपराध करते है। यह एकमत उनमें कानून को शत्रु मानने एक–दूसरे की सहायता करने सम्बन्धी नियम उत्पन्न करने एवं अपराधी–संसार कें प्रति निष्ठा विकसित करने में भी पाया जाता है।पेशेवर अपराधियों में समय पाबन्दी कें प्रति भी मतैक्य मिलता है। किन्ही दो अपराधियों में से एक द्वारा निश्चित समय पर पूर्व–निश्चित स्थान पर न पहुॅचने का अर्थ है कि वह गिरफ्तार हो गया है और क्योंकि एक की गिरफ्तारी होने के खतरे को बढाती है अतः दूसरा अपने मित्र द्वारा समय पन न पहुॅचनें के कारण वहॉ से चला जाना ही उचित समझता है।

विभिन्न सम्पर्क

विभिन्न सम्पर्क पेशेवर अपराधियों का प्रमुख लक्षण है। पेशेवर अपराधी अपराधी–संसार कें अंग होते है तथा परम्परागत समाज से पृथक रहते है। उनके पारस्परिक सम्बन्धो में विभिन्नता का तत्व भौगोलिक न होकर मुख्यतः प्रकार्यवादी होता है। उनके व्यक्गित सम्पर्क अनेक अवरोधों के कारण सीमित होते है। ये अवराधक उनके सुरक्षा कुशलता व सामुदायिक हितों पर आधारित होते है। उदाहरण के लिए जब कुछ अपराधी आपस में बातें कर रहे होते है तब एक अनजान व्यक्ति के आ जाने से वे बिल्कुल खामोश हो जाते है। इसी प्रकार इस विभिन्न सम्पर्क के कारण ही एक पेशेवर चोरों का समूह एक पेशेवर चोर को अपना सदस्य मानकर उसे पेशेवर चोन की प्रस्थिति प्रदान करता है। उस समूह द्वारा उसे अपना सदस्य न मानने का अर्थ होगा कि उसे पेशेवर चोर की प्रस्थिति नहीं दी गयी है यद्यपि उसने चोरी को ही अपने जीवन–निर्वा का साधन क्यों न बनाया हुआ हो। पेशेवर अपराधियों में यद्यपि विभिन्न सम्पर्क पाया जाता है परन्तु फिर भी वे सामान्य सामाजिक व्यवस्था से बिल्कुल पृथक न रहकर उसका इस कारण अंग बने रहते है क्योंकि उनका शिकार कानून मानने वाले व्यक्तियों के समाज में ही रहता है , पुलिस से संरक्षण प्रदान करने वाले उनके कुछ साथी इसी समाज में रहते है, उनकी मूल आवश्यकताएॅ इसी समाज में पूरी होती है।

संगठन

पेशेवर अपराधी अधिकांशतः संगठित भी होते है क्योंकि इसी संगठन द्वारा सदस्यो को अपराध करने के लिए आवश्यक सूचना मिलती रहती है। एक पेशेवर अपराधी का ज्ञान व उसके अपराध करने की विधियॉ उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति न मानकर सम्पूर्ण पेशे की सम्पत्ति मानी जाती है जैसे शाम के समय जेब काटने के लिए चॉदनी चौक बहुत अच्छा स्थान है मकानो के निर्माण के स्वरूप के कारण जवाहरनगर कॉलोनी चोरी करने के लिए अच्छी कॉलोनी है , क पुलिस इन्स्पैक्टर बहुत क्रूर व निष्ठुर है आदि निदेश एक पेशेवर अपराधी दूसरे पेशेवर अपराधी तक तब तक पहुॅचाता रहता है जब तक पूरा पेशा उन निदेशो को न जान जाये। इसी प्रकार पेशेवर अपराध में एक–दूसरे को संकटपूर्ण परिस्थितियों में सहायता पहुॅचाने हेतु अनौपचारिक सेवाएॅ भी संगठित की जाती है।

पेशेवर अपराधी के विचार मूल्य व जीवन–दर्शन अपने ही होते है जो साधारणतया संगठित समाज को मान्य नही होते। उसका यही जीवन–दर्शन उसकी विभिन्न क्रियाओं आदि का मार्ग–दर्शन करता है तथा उसके और कानून मानने वाले व्यक्तियों के मध्य प्रभेद करता है। उदाहरणार्थ– खिडकियों, दरवाजों व रोशनदानों को वह मकान के लिए हवा और रोशनी का साधन न मानकर चोरो और उकैतो के लिए मकानों में घुसने के साधन मानता है। मोटरकार को वह गतिशीलता बढाने का माध्यम नहीं अपितु अपराध करने के उपरान्त शीघ्र भागने का साधन समझता है। यदि कभी अपराध करते हुए पकडा जाताह ै तो कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कभी–कभी कठिन समय का सामना करता है तथा शीघ्र यह कठिन समय समाप्त हो जायेगा। अपनी मक्कारी और बेईमानी का यक तर्क देता है कि समाज में कोई व्यक्ति ईमानदार नही होता वह सोचता है कि जब मिनिस्टर राजनीतिज्ञ तथा उच्च अधिकारी आदि लाखों–करोडो का गबन करते है तो उसके कुछ रूपये इधर–उधर करने से क्या होता है अपने समूह के किसी सदस्य के मरने पर वह अधिक शोक नही मनाता ।जब पेशेवर अपराधी पकडा जाता है तब उसे पश्चाताप नही होता केवल खिझाहट होती है क्योंकि अपनी चतुरता से कानून को धोखा देने में वह सफल नहीं हो सका है अतः पुनः अपराध करने के लिए वह अधिक सावधान होने का निश्चय करता है। वह यह सोचता है कि प्रत्येक व्यक्ति को कभी–कभी दुर्भाग्य का सामना करना पडता है अतः उसे भी क्योंकि इस बार किस्मत ने साथ नही दिया है इस कारण सन्तोष करना चाहिए एवं साधारण कानून–उल्लंघन के लिए अपने को अपराधी स्वीकार करना चाहिए।

क्वीने का कहना है िकवह ऐसा जीवन–दर्शन अपनाता है कि जो एवे अपनी क्रियाओं व अत्म–प्रतिरूप सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर देता है। पेशेवर अपराधी पारस्परिक अन्तःक्रिया के लिए कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग करते है। ये शब्द उनकी विशिष्ट क्रियाओं से उत्पन्न होते है तथा वे उनके कानून, समाज , क्षतिग्रस्त व्यक्ति एवं अन्य अपराधियों कें प्रति धारणाएॅ स्पष्ट करते है। माउर के अनुसार, इन शब्दो कें प्रयोंग कें प्रमुख कारण है–

1. पेशेवर अपराधियों का कानून कें बाहर काम करना,
2. अपराधी उप–संस्कृति को संचित करना
3. अपने समूह के लिए समैक्य विकसित करना
4. आपस मित्रता की भावना उत्पन्न करना तथा
5. पेशे की प्रकृति का इस प्रकार होना जिसके लिए साधारण नागरिकों की शब्दावली में कोई शब्द नहीं

होते कभी–कभी ये शब्द क्षतिग्रस्त व्यक्तियों को धोखा देने व भ्रम में डालने के लिए भी प्रयोग किये जाते है।

निष्कर्ष

पेषेवर अपराधियों को कैस सुधारा जाये हमारा विश्वास है कि इसके लिए बन्दीकरण अति आवश्यक है काल्डवेल का विचार है कि कारावास की अवधि में पेशेवर अपराधी का जेल नियमों के पालन करने सम्बन्धी व्यवहार स्वयं के पुनर्वासन की भावना से नही किन्तु दण्ड–अवधि में छूट प्राप्त करने के लिए ही होता है। परन्तु हमारा विचार है कि जेल–व्यवस्था अपराधियों के मूल्यों और धारणाओं में परिवर्तन हेतु अवश्य ही सहायक ही होनी चाहिए जिससे जब भी यह अनुभव किया जाये कि उनके विचारों में आवश्यक परिवर्तन आया है उनको तुरन्त छोड दिया जाये अधिक सुरक्षा वाले कारागृहों तथा आदर्श–जेलों में कुछ समय रखने के उपरान्त इन्हे खुले जेलों में रखना अधिक उपयोगी होगा ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अपराधशास्त्र एवं दंडशास्त्र तथा सामाजिक विघटन (गूगल पुस्तक य लेखक – रामनाथ शर्मा, राजेन्द्र कुमार शर्मा)*
2. *राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो*
3. *International association of professionals specialized in criminology.*
4. *Criminology Mega-Site — Dr. Tom O'Connor (Associate Professor of Criminal Justice, Austin Peay State University)*
5. *आधुनिक अपराधशास्त्र डॉ जी एल शर्मा*
6. *आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन डॉ. जे. पी. सिंह*